(गद्य) महिला

खामोश ! अदालत जारी है

बेणारे-हां ! बहुत कुछ कहना है मुझे। (अंगड़ाई लेकर) कितने बरस बीत गए, कुछ कहा ही नहीं। क्षण आए, चले गए। एक के बाद एक तूफान आए, मगर कण्ठ में ही घुटकर रह गए। छाती में प्राणांतक आक्रोश उठे, किन्तु हर बार होठों को कसकर भीच लिया। लगा कि कोई भी इसे जान नहीं सकेगा, कोई भी समझ नहीं सकेगा इसे। जिस समय शब्दों का प्रचण्ड ज्वार उमड़ता हुआ आकार होठों से टकराने लगता है तो लगता है वह मेरे आसपास रहने वाले आदमी कितने नासमझ, पागल और बचकाने हैं। सभी ! वह भी, जो नितान्त अपना है। दिल करता है उन पर जी भर हसँती रहूँ। बस, हँसती ही रहूँ। और तब मन फूट–फूटकर रो उठता है ओर इतना रोता कि आंते ऐंठने लगती है। लगता कि हृदय फट जाए तो अच्छा हो। ज़िन्दगी कितनी सारहीन लगती। एक गहरा निःश्वास भरकर मगर प्राण नहीं जाते और न जाने पर फिर उसके महत्व का अहसास होता है। आने वाला हर क्षण फिर कितना नया और अनोखा लगता है। आकाश, पक्षी, बादल किसी सूखे तरू की धीरे से झांकती हुई कोई टहनी और खिड़की में हिलता हुआ परदा। चारों ओर फैली हुई नीरवता और कहीं दूर से आती हुई अस्पष्ट आवाज़ें, हास्पिटल और दवाओं की भभक यह सब भी तब जिन्दगी की रस से परिपूर्ण लगती है। लगता है ज़िन्दगी चौकड़ी भरती हुई मेरे लिए गीत गा रही है। कितना ज्यादास था आत्महत्या की असफलता का आनन्द।

विजय तेंडुलकर

(गद्य) महिला

रोमियो और जूलियट

जूलियट विदा ! भगवान जानता है हम फिर मिलेंगे। मेरी धमनियों में एक धुँधला ठण्डा भय स्फुरित हो रहा है, लगता है जैसे जीवनी–शक्ति की सारी ऊष्मा को वह बर्फ की तरह जड़ीभूत किए दे रहा है। मैं उन्हें अपने पास फिर बुला लूँ कि वे मुझे साहस बँधा सकें, धाय ... लेकिन वह यहाँ क्या करेगी ? अपना यह भयानक काण्ड मुझे एकान्त में ही करना चाहिए। आह ! विष ! कहीं इसने कोई भी असर न किया तो ? तो क्या कल प्रातःकाल मेरा विवाह हो जाएगा ? नहीं, नहीं, यह उसे रोक देगा। पड़ा रह यहीं। (एक छुरा रखती है) और यदि यह विष ही हो जो पादरी ने मुझे चुपचाप मार डालने को दिया हो कि कहीं वह विवाह कलंकित न हो जाए, जो स्वयं उसी ने रोमियों और मेरा संबंध जोड़कर कराया है ? मुझे यही डर है। पर फिर भी मैं सोचती हूँ, यह नहीं हो सकता, क्योंकि वह तो एक पवित्र व्यक्ति है, कौन नहीं जानता। और जो कहीं कब्र में लिटाई जाने पर मैं रोमियों के छुड़ाने आने के पहले जाग गई तो ? यह एक भयानक बात है। तो क्या मैं उस कब्र में तब घुट नहीं जाऊँगी ? वहां स्वच्छ वायु तो पहुँचतीं ही नहीं। कहीं अपने रोमियों के आने के पहले ही मैं घुटकर मर गई तो ? यदि मैं जीवित भी रही, क्या ऐसा तो न होगा कि मृत्यु और रात के भीषण अंधकार में, उस डरावनी जगह में, कब्र जैसी जगह में पुरानी कब्र, जहाँ से सैकड़ों बरसों से मेरे पूर्वजों की हड्डियाँ गड़ी हैं, भरी हुई हैं, जहाँ खूनी टाइवॉल्ट अभी धरती में ताज़ा पड़ा है, कफ़न सड़ता हुआ, जहाँ लोग कहते हैं, रात के किसी पहर में आत्माएँ डोलती हैं ... मैं रह सकूँगी ? उफ, उफ ! कहीं जल्दी भाग गई मैं !! तो उस दुर्गंध और चीत्कारों से ऐसी न हो जाऊँ, जैसे धरती से मैण्ड्रेक उखाड़ने पर हो जाए कोई, कि जीवित–मर्त्य उसे पागल–सा भागता देखें ! जाग गई मैं ! तो इन विकराल वस्तुओं को देखकर पागल न हो उठूँगी मैं ! क्या मैं पागल की तरह पूर्वजों की हड्डियों से खेलूँगी ? कटे हुए टाइबॉल्ट को उसके कफ़न से निकाल लूँगी और उसी क्रोध में, किसी महान पूर्वज की हड्डी को डण्डे की तरह चलाकर अपना सिर फोड़ लूँगी, अपना अशक्त मस्तिष्क नष्ट कर लूँगी ? उफ ! देखो ! देखो ! मुझे लगता है टाइबॉल्ट का प्रेत रोमियों को ढूँढ़ रहा है, जिसने तलवार की नोक पर उसका शरीर उठाकर फेक दिया था ! टाइबॉल्ट ! ठहर जाओ ! रोमियो ! मैं आ रही हूँ। यह मैं तेरे लिए पीती हूँ।

विलियम शेक्सपीयर

दिनेश

(पद्य) महिला

मधुशाला

बने पुजारी प्रेमी साक़ी,
गंगाजल पावन हाला,
रहे फेरता अविरल गति से
मधु के प्यालों की माला,
'और लिये जा, और पिए जा'—
इसी मंत्र का जाप करे,
मैं शिव की प्रतिमा बन बैठूँ।
मंदिर हो यह मधुशाला।

बजी न मंदिर में घड़ियाली,
चढ़ी न प्रतिमा पर माला,
बैठा अपने भवन मुअज़्ज़िन
देकर मस्जिद में ताला,
लुटे ख़ज़ाने परपतियों के
गिरीं गढ़ो की दीवारें ;
रहें मुबारक पीनेवाले,
खुली रहे यह मधुशाला।

हरिवंशराय 'बच्चन'

[illegible]

(पद्य) महिला

ज़मीन

उसने तय किया यह बढ़ई के पास जायेगा
और बातचीत शुरू करेगा
पत्ते गिर रहे हैं और इस समय उसकी रूखानी का
जरा–सा हिलना भी निर्णायक हो सकता है

लाल पत्थर की तरह लग रही थी ज़मीन
जब उसने पहली बार देखा
और उयसे याद आया यही मौसम है जब पेड़
सबसे ज्यादा परेशान होते हैं
मेज और कुर्सियाँ बनने के लिये

अगर इस समय पेड़ को
पेड़ कहना बेमानी लगता है–
और ज़ाहिर है कि लगता है उसने सोचा–
तो उसे ताज़ा बुरादे की ठण्डी खुशबू कहने में
कोई हर्ज़ नहीं

यह पशुओं के बुखार का मौसम है
यानी पूरी ताकत के साथ
ज़मीन को ज़मीन
और फावड़े को फावड़ा कहने का मौसम
जब जड़ें
बकरियों के थनों की
गरमाहट का इंतजार करती है

केदारनाथ सिंह

निम्न नाटकों में से किसी एक नाटक पर साक्षात्कार में बातचीत करने के लिये :–

क्र0सं0	नाटक	नाटककार
01.	अभिज्ञान शाकुन्लतम्	कालिदास
02.	ध्रुव स्वामिनी	जयशंकर प्रसाद
03.	अंधेर नगरी	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
04.	लहरों के राजहंस	मोहन राकेश
05.	ख़ामोश ! आदलत जारी है	विजय तेन्दुलकर
06.	कथा एक कंस की	दया प्रकाश सिन्हा
07.	किंग इडिपस	सोफोक्लीज़
08.	रोमियो और जूलियट	विलियम शेक्सपीयर
09.	ए डॉल्स हाउस	हेनरिक इब्सन
10.	चैरी का बगीचा	अन्तोन चेखव